वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 4 | बुधवार 3 मई 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

प्रदेश में बारिश से 14 डिग्री गिरा तापमान

3 दिन पूरे राज्य में तेज बरसात का अलर्ट; फोरेस्ट ऑफिसर की गाड़ी बही

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान में इस बार मौसम के उलटफेर ने सभी को चौंका दिया। जहां इन दिनों हर साल 44 डिग्री सेल्सियस तापमान वाली भीषण गर्मी लोगों को सताती है। वहीं, इस बार सर्दी जैसी धुंध सुबह-सुबह दिखाई दे रही है और मौसम में काफी ठंडक है। कई शहरों में बीते दो दिनों में डेढ़ से 2 इंच तक बरसात हुई है। इस कारण दिन का तापमान सामान्य से 14 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया है। विशेषज्ञों के मुताबिक मौसम की ये स्थिति अभी अगले 3 दिन और बनी रह सकती है। बारिश के कारण कई बरसाती नदी-नालों में पानी आ गया है। करौली में ऐसे ही एक नाले में फोरेस्ट ऑफिसर की गाड़ी बह गई। हालांकि ऑफिसर को बचा लिया गया। राज्य में मंगलवार की स्थिति देखें तो बीकानेर, हनुमानगढ़, गंगानगर समेत उत्तर राजस्थान के कई हिस्सों में सुबह-सुबह धुंध छाई रही। इससे पहले पिलानी, चूरू, सीकर, अजमेर समेत कई जिलों में सोमवार देर शाम तेज बारिश हुई। हनुमानगढ़-गंगानगर एरिया में 30 किलोमीटर स्पीड से चली तेज हवा के साथ तूफानी बारिश हुई। बारिश का ये मौसम देखकर ऐसा महसूस हो रहा है कि इस बार मानसून समय से पहले आ गया हो। शहरों-गांवों में बारिश के कारण जगह-जगह सड़कों और छोटे बरसाती नालों में पानी बहता दिखा। राज्य के कई शहरों में हुई तेज बारिश के बाद मौसम में ठंडक बढ़ गई। अलवर, जयपुर, पिलानी और सिरोही में कल अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे दर्ज हुआ, जो अमूमन नंवबर-दिसंबर के महीने में रहता है। सबसे ठंडा दिन अलवर में रहा, यहां दिन का अधिकतम तापमान 26.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो यहां के सामान्य तापमान से 14 डिग्री सेल्सियस कम रहा। मौसम के इस बदलाव के कारण आज उत्तर भारत के कई जिलों में विजीबिलिटी 300 मीटर से भी कम रही।

बारिश के कारण कई बरसाती नदी-नालों में पानी आ गया है। करौली में ऐसे ही एक नाले में फोरेस्ट ऑफिसर की गाड़ी बह गई। हालांकि ऑफिसर को बचा लिया गया।

अगले 3 दिन पूरे राज्य में आंधी-बारिश का अलर्ट

राजस्थान में मौसम का ये दौर अभी थमने की उम्मीद कम है। क्योंकि आज से एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो रहा है, जिसकी

तीव्रता ज्यादा है। एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन पंजाब-हरियाणा पर बना हुआ है, जिसके असर से एक ट्रफ लाइन यहां से गुजर रही है। इस सिस्टम के असर से राजस्थान के उत्तरी हिस्सों गंगानगर, हनुमानगढ़ समेत कई जगहों पर बारिश हो सकती है। इसके साथ ही एक दूसरा पश्चिमी विक्षोभ भी इसी सप्ताह सक्रिय होगा, जिसका असर 7 मई तक प्रदेश के कई हिस्सों में देखने को मिलेगा।

हाल ही में मृत्यु पर किए गए शोध ने क्या अद्भुत परिणाम दिया?

वैज्ञानिकों ने पहली बार किसी मरने वाले की मौत से महज 15 मिनट पहले उसकी दिमागी गतिविधि को रिकॉर्ड किया है और इसके चौंकाने वाले नतीजे सामने आए हैं। आयुर्वेद में वर्णित अरिष्ट लक्षणों से यह समानता रखते हैं।

शोधकर्ताओं ने सपने और ध्यान के दौरान समानता के साथ मृत्यु के समय लयबद्ध मस्तिष्क तरंग पैटर्न पाया। उन्होंने दर्ज किया कि गामा दोलनों (Gamma oscillations) में वृद्धि हुई थी जो सपने देखने और स्मृति पुनर्प्राप्ति के दौरान होती है।/बता दें कि मनुष्य की अलग-अलग चेतनाओं के लिए भिन्न-भिन्न (मस्तिष्क तरंग पैटर्न)/ Brain Waves होते हैं, जैसे-चेतन अवस्था में आराम करते हुए — (Alpha Waves) किसी कार्य को ध्यान पूर्वक करते समय — **(Beta Waves)** किसी कार्य को अत्यंत ध्यान पूर्वक करते समय या ध्यान में — (Gamma Waves)जागृत अवस्था में — (Theta Waves)प्रगाढ़ निद्रा के समय — (Delta Waves)अध्ययन एक 87 वर्षीय विकसित मिर्गी रोगी के रूप में आयोजित किया गया था। दौरे का पता लगाने के लिए डॉक्टर इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राफी (EEG) कर रहे थे, हालांकि, दिल का दौरा पड़ने से मरीज की मौत हो गई। इसने वैज्ञानिकों को पहली बार एक मरते हुए मानव मस्तिष्क की गतिविधि को रिकॉर्ड करने की अनुमति दी।अमेरिका के लुइसविले विश्वविद्यालय में एक न्यूरोसर्जन डॉ अजमल ज़ेमर ने कहा, हमने मृत्यु के समय के आसपास 900 सेकंड की मस्तिष्क गतिविधि को मापा और दिल की धड़कन बंद होने से पहले और बाद में 30 सेकंड में क्या हुआ, इसकी जांच के लिए एक विशेष ध्यान केंद्रित किया।उन्होंने आगे कहा, स्मृति पुनर्प्राप्ति में शामिल दोलनों (Waves) को उत्पन्न करने के माध्यम से, मस्तिष्क हमारे मरने से ठीक पहले महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं को याद कर सकता है, जैसा कि निकट-मृत्यु के अनुभवों में बताया गया है।ज़ेमर ने समझाया कि मस्तिष्क के दोलन उच्च-संज्ञानात्मक कार्यों में शामिल विभिन्न प्रकार के दोलनों के साथ सामान्य रूप से जीवित मानव मस्तिष्क में मौजूद लयबद्ध मस्तिष्क गतिविधि के पैटर्न हैं।दिल के काम करना बंद करने से ठीक पहले और बाद में, हमने तंत्रिका दोलनों के एक विशिष्ट बैंड में परिवर्तन देखा, तथाकथित गामा दोलन, लेकिन डेल्टा, थीटा, अल्फा और बीटा दोलनों जैसे अन्य में भी, ज़ेमर ने कहा। (Frontiers in Aging Neuroscience) में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि मृत्यु के संक्रमण के दौरान और उसके बाद भी मस्तिष्क सक्रिय और समन्वित रह सकता है और यहां तक कि पूरे परीक्षण को व्यवस्थित करने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है।अध्ययन में यह भी पाया गया कि एक मरीज के मस्तिष्क के एक मामले और स्टेम से डेटा एकत्र किया गया था, जिसे दौरे और सूजन का सामना करना पड़ा था, जो डेटा की व्याख्या को जटिल बनाता है। लेकिन, यह बताया कि और मामलों की जांच की जाएगी।एक आशावादी संदेश में, ज़ेमर ने कहाः इस शोध से हम जो कुछ सीख सकते हैं, वह यह है कि हालांकि हमारे प्रियजनों की आंखें बंद हैं और हमें आराम करने के लिए अपना जीवन छोड़ने की उनकी तैयारी हैं, फिर भी उनका दिमाग उनके जीवन में अनुभव किए गए कुछ सबसे अच्छे क्षणों को फिर से चला रहा है। यहां सबसे उत्तम बात यह है कि आगे आने वाले शोधों से हमें मृत्यु के बाद के रहस्यों का पता चलेगा इस प्रकार की और जानकारियों को प्राप्त करने के लिए डा पीयूष त्रिवेदी से लेखों के माध्यम से जुड़े रहें...

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।
9828011871

उपाध्याय श्री उर्जयंत सागरजी महाराज का प्रताप नगर में मंगल प्रवेश आज 3 मई को

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 8 प्रताप नगर में वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज के शिष्य उपाध्याय श्री उर्जयंत सागरजी महाराज का ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु भव्य मंगल प्रवेश बुधवार दिनांक 3 मई 2023 प्रातः 7:30 होगा। मुनि भक्त जिनेंद्र जैन जीतु, निर्मल जैन, पूरण जैन, कमलेश बावड़ी, बाबूलाल इटुंडा, सतीश साखुनिया, अनमोल सेठी विहार में शामिल हुए।

श्री 108 बालाचार्य निपुरणा नंद जी महाराज का ससंघ भव्य मंगल प्रवेश

चंद्रेश कुमार जैन. शाबाश इंडिया

श्री महावीरजी। स्थानीय श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में श्री 108 बालाचार्य निपुरणा नंद जी महाराज का ससंघ भव्य मंगल प्रवेश हुआ जिसमें आगे आगे बैंड बाजे चल रहे थे कस्थानीय चंदनबाला महिला मंडल ने जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश किया। मुख्य मंदिर के द्वार पर मैनेजर नेमी कुमार पाटनी, विकास पाटनी विशेष अधिकारी, पंडित मुकेश शास्त्री , सोनू पुजारी, भारतीय जैन महासंघ के संरक्षक महेश कासलीवाल, अध्यक्ष चंद्रेश कुमार जैन, संजय जैन, राजकुमार पांडेय मंत्री अन्य सभी ने महाराज जी की आरती उतार वा पाद प्रक्षालन किया। बाल ब्रह्मचारी महावीर भैया इस मौके पर आचार्य ज्ञेय सागर जी महाराज व मुनि श्री चिन्मयानंद जी महाराज ने मुख्य मुख्य मंदिर जी में मूलनायक प्रतिमा जी के दर्शन किए ध्यान केंद्र का अवलोकन किया। तदोपरांत मंदिर के पीछे चरण छतरी पर भगवान महावीर की 24 फीट खडगासन प्रतिमा के दर्शन किए। रामकृष्ण भैया , नवीन भैया, ब्रह्मचारी महावीर भैया इस मौके पर आए हुए श्रद्धालु व भक्तगणों ने धर्म लाभ लिया कमहाराज श्री ने अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

अंतरराष्ट्रीय जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव में केवल ज्ञान कल्याणक मनाया गया

राजेश जैन दद्दू, शाबाश इंडिया

इन्दौर. शाबाश इंडिया। श्री 1008 आदिनाथ त्रिकाल चोवीसी मज्जिनेन्द्र अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव कल्पतरु में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम शिष्य मुनिश्री 108 आदित्य सागरजी महाराज मुनिश्री अप्रमित सागर जी महाराज मुनिश्री सहज सागर जी महाराज के परम सानिध्य मे प्रतिष्ठाचार्य पं पवन दीवान एवं सह प्रतिष्ठाचार्य पं नितिन झांझरी बाल ब्रह्मचारी पियुष भैया जी के पावन निर्देशन में आज केवल ज्ञान कल्याणक मनाया गया। प्रातः जिनाभिषेक शांतिधारा नित्य पुजन देव शास्त्र गुरु की केवलज्ञान की पुजन कि गई। महा मुनिराज आदिनाथ की छ महीने बाद आहार चर्या इक्षू रस के साथ पहला ग्रास राजा श्रेयांस एवं राजा सोम के द्वारा दिया गया। फिर इन्द्र-इन्द्राणीयो एवं सैकड़ों लोगों ने मुनिराज को आहार कराया। तीर्थंकर मुनि दीक्षा के बाद मोन होकर घोर तपस्या कर धर्म ध्यान को बड़ाते हुए मोहनिय कर्म का पुर्ण क्षय करते हुए बारहवें गुणस्थान ज्ञानावरण, दर्शनावरण अन्तराय कर्म का क्षय करते हुए केवलज्ञान को प्राप्त कर लेते हैं। मुनीश्री आदित्य सागरजी महाराज अप्रमित सागर महाराज,सहज सागर महाराज के ससंघ ने सारी प्रतिमाओं को सुर्यमंत्र देकर पुज्नीय बना दिया, फिर सारी प्रतिमाएं पुज्यनीय हुई। दोपहर में समवशरण की रचना कि गई इस सभा में इंदौर नगर के मुर्धन्य विद्वान पंडित रतनलाल जी शास्त्री,प्रवीण जैन, पीसी जैन, मनीष, जैन, अर्पित वाणी, टीके वेद, राजेश जैन दद्दू, आदी समाज जन उपस्थित हुए।समवशरण में केवलज्ञान होने के बाद सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर विशेष रत्न एवं मणियों से समवशरण की रचना करता है। समवशरण मे बारह घेरे होते है। शाम को भव्य आरती कि गई।जिसमे बड़ी संख्या में पुरुष एवं महिलाएं संगीत की धुन पर नृत्य करते आरती की।

छत्तरपुर गौरव पूज्य आचार्य अंतर्मना प्रसन्न सागर जी ने आज आचार्य श्री विद्यासागर जी का पाद प्रक्षालन डोंगरगढ़ में किया

शाबाश इंडिया। डोंगरगढ़ में आचार्य श्री जी के चरण अंतर्मना पूज्य प्रसन्न सागर जी ने पाखरे, उसी अवसर पर यह पंक्तियाँ, श्रद्धा, भक्ति,अनुराग, समर्पण से अप्लावित

सतयुग के ये दृश्य जो देखे
कितनी श्रद्धा, कितनी भक्ति पद रज शीश लगायी
प्रासुक जल से चरण पाखरे,
रोम रोम हर्षायी
चरणन शीश रखा फिर अपना
रोम रोम हर्षाया
पूरी श्रद्धा भक्ति से, उनको हृदय बिठाया
सप्त स्वर्ग के सुख पाये हों, मुदित हुआ है तन मन,
पीयूष सागर साथ साथ में, करते संग प्रक्षालन
गंधोदक ले निज ललाट पर,
फिर गुरुवर हर्षाये
स्वर्ग सम्पदा मिली आज ज्यों,
पुलकित मोद मनाये
फिर चरणों पर नयन रख दिए,
कर में लेकर उनको
कभी न छोड़ू, भाव हैं मन में,
हृदय लगाते उनको
ऐसी श्रद्धा, भक्ति देखो पूज्य प्रसन्न सागर की, महोदधि जो तप चर्या के, श्रद्धा, भक्ति उनकी
संत शिरोमणि कर से पल पल उनको आशीष देते, नयनों की दिव्य नेह सुधा से,
अविरल तृप्ती देते
सतयुग के यह दृश्य जो देखे, भक्ति, श्रद्धा, वंदन के,
युगों युगों तक अमर रहें, ये श्रेष्ठ संत इस भू के.नमोस्तु पूज्य श्री..

सदैव चरण रज पीपासु
इंजिनियर अरुण कुमार जैन

बेटा पढ़ाओ-संस्कार सिखाओ अभियान के संयोजक कवि शर्मा ने मुख्यमंत्री की विशेष सचिव आईएएस आरती डोगरा से की दिव्य ज्योति यात्रा को लेकर चर्चा

जयपुर. शाबाश इंडिया। बेटा पढ़ाओ-संस्कार सिखाओ अभियान व डिवाइन स्टूडियो झुंझुनूं की पहल एवं त्रिदेव नंदी गौ सेवा समिति जालिमपुरा द्वारा आयोजित दिव्य ज्योति यात्रा को लेकर मुख्यमंत्री कार्यालय में मुख्यमंत्री की विशेष सचिव, आईएएस आरती डोगरा से बेटा पढ़ाओ-संस्कार सिखाओ अभियान के संयोजक कवि हरीश शर्मा, अभियान सह-संयोजक आकाश झुरिया व यात्रा संयोजक मन्नू परदेशी ने चर्चा की। मुलाकात के दौरान आईएएस आरती डोगरा को बेटा पढ़ाओ-संस्कार सिखाओ अभियान पर लिखित पुस्तक भी भेंट की गई। यात्रा संयोजक मनोज मन्नू परदेशी ने जानकारी देते हुए बताया कि ये दिव्य ज्योति यात्रा 7 मई को झुंझुनूं से प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण राजस्थान की 5500 किलोमीटर से अधिक की 21 दिवसीय आध्यत्मिक व जन जागरूक रथ यात्रा कार्यक्रम रहेगा। यात्रा के दौरान पूरे राजस्थान में पक्षियों के लिए 2016 परिंडे लगाये जायेंगे। दिव्य ज्योति यात्रा का का टैग लाइन है - आओ जुड़े प्रकृति के साथ। इस यात्रा में लोगो को हरित क्रांति के लिए भी जागरूक किया जायेगा।

वेद ज्ञान

वास्तविकता से मुंह न चुराएं

जब हम सत्य को त्याग देते हैं, वास्तविकता से मुंह चुराते हैं, तब दरअसल हम खुद से दूर भाग रहे होते हैं। सत्य स्वयं में हमारा स्वभाव है। सत्य केवल उसी मन में, स्थिति में ही प्रकट होता है जब हमारी समस्त जानकारियां अनुपस्थित होती हैं, हमारा ज्ञान जब कायरत नहीं होता। मन ज्ञान का स्थान है, वह ज्ञान का अवशेष है। जब वह स्थान समस्त ज्ञान से रिक्त होकर शून्य होता है, देखा-सुना जब छूट जाता है तब उस स्थिति में भी जो अज्ञान सामने आता है, वह सत्य को जन्म देने में समर्थ होता है। हमें मन के लिए अपने प्रति, अपने सचेत तथा अचेत अतीत के अनुभवों के प्रति अपनी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रति सचेत होना अनिवार्य है। आप किसी दूसरे के द्वारा सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते। सत्य जड़ वस्तु, स्थान या प्रतिक्रिया नहीं है, तत्काल उपलब्ध होने वाला कोई भावनात्मक रूप भी नहीं है। सत्य चेतन, सजीव, गति पूर्ण, सतर्क, स्फूर्त है। जब मन सत्य की खोज करता है तब वह परम्परागत प्रणाली, प्रक्रियाओं और पूर्ववर्ती धारणाओं का पालन कर अपने अंदर की चीज को बाहर देख रहा होता है। मन सत्य को खोजते हुए अत्मसंतोष को प्राप्त कर लेता है। अंततः आदर्श आत्मसंतोष के कारण मन वास्तविकता को नहीं वरन उस अवास्तविकता को ही स्वीकार कर लेता है, जो मिथ्या है। वास्तविकता वही है जो वास्तव में है, इसका विपरीत नहीं। समस्त ज्ञान के लीन होने पर शाश्वत अनुभूति में एक मिठास का अनुभव होता है। उसी आदत में सत्य है। हम केवल ज्ञान के विषय में ही सोच पाते हैं, ज्ञान के पीछे ही दौड़ते हैं। जब मन ज्ञान, उनके परिणामों और क्रिया-प्रतिक्रियाओं से आहत नहीं होता है। समस्या यह है कि हममें अवास्तविक क्या है? लेकिन इस समस्या से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। समस्या का यथावत अवलोकन करने पर समाधान निश्चित है। प्रत्येक समस्या स्वयं में समाधान रखती है और ऐसी कोई पहेली नहीं है जिसका हल न हो। प्रत्येक सामने आ खड़ा होने वाला प्रश्न स्वयं में उत्तर छिपाए बैठा होता है। मैं क्या हूं, कौन हूं, इसके प्रमाण के लिए दूसरों की क्या आवश्यकता? स्वयं के प्रमाण के लिए अन्य प्रमाण कोई औचित्य नहीं रखता।

संपादकीय

महिलाओं की भागीदारी...

सेवा का कोई भी क्षेत्र हो, अधिक विविध होने से संभावनाएं बड़ी होती हैं। न्यायपालिका में भी महिलाओं की संख्या अपेक्षानुरूप होना बदलाव को न केवल दृष्टिगोचर करेगा, बल्कि लैंगिक रूढ़िवादिता को भी दूर करने में यह मददगार सिद्ध होगा। अपने जीवनकाल में महिलाओं के अधिकारों, मतदान के अधिकारों और सभी के लिए समान अधिकारों के लिए लड़ाई में संलग्न अमेरिकी उच्चतम न्यायालय की महिला न्यायाधीश रहीं रूथ वेदर गिन्सबर्ग से जब एक बार पूछा गया था कि अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय में कितनी महिला न्यायाधीश पर्याप्त होंगी, तब उन्होंने कहा कि मुझे तब संतोष होगा कि जब अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में सभी नौ न्यायाधीश महिलाएं होंगी। गौरतलब है कि साल 2020 में अपनी मृत्यु तक उन्होंने सत्ताईस वर्ष अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय में अपनी सेवाएं दी। विदित हो कि अमेरिका की शीर्ष अदालत में एक मुख्य न्यायाधीश समेत नौ न्यायाधीश होते हैं, जबकि भारत के सर्वोच्च न्यायालय में यही संख्या चौंतीस है। भारत स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के दौर में है। पचहत्तर साल की आजादी के इस दरमियान महिला सशक्तिकरण को लेकर विविध क्षेत्रों में कार्य किए गए। सिविल सेवा, पुलिस सेवा, इंजीनियर, डाक्टर, सेना और न्यायिक सेवा समेत विविध क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति बाकायदा देखी जा सकती है। मगर इस कसक के साथ कि उच्च और उच्चत्तम न्यायालय में महिलाओं के लिए पर्याप्त प्रतिनिधित्व का प्रयास बड़ा आकार नहीं ले पाया। सर्वोच्च न्यायालय में प्रधान न्यायाधीश के पद पर अभी तक किसी महिला न्यायाधीश की नियुक्ति नहीं हुई है। हालांकि न्यायाधीश के रूप में कई महिलाएं नियुक्त हो चुकी हैं और इस बार कालेजियम ने तीन महिला न्यायाधीशों को सुप्रीम कोर्ट में नियुक्त करके एक बड़ी पहल की है। संभव है कि 2027 तक देश को पहली महिला प्रधान न्यायाधीश मिले। गौरतलब है कि वर्ष 1989 में न्यायमूर्ति एम फातिमा बीबी सर्वोच्च न्यायालय की पहली न्यायाधीश बनी थीं। वे केरल न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्त हुई थीं। यह सही है कि विविधता सकारात्मक परिवर्तन को बढ़ावा देती है। सेवा का कोई भी क्षेत्र हो, अधिक विविध होने से संभावनाएं बड़ी होती हैं। न्यायपालिका में भी महिलाओं की संख्या अपेक्षानुरूप होना बदलाव को न केवल दृष्टिगोचर करेगा, बल्कि लैंगिक रूढ़िवादिता को भी दूर करने में यह मददगार सिद्ध होगा। न्यायपालिका के सभी स्तरों पर महिलाओं के लिए पचास फीसद आरक्षण के लिए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एनवी रमन्ना का आह्वान सराहनीय है, मगर वस्तुस्थिति यह है कि सर्वोच्च न्यायालय में अब तक ग्यारह महिला न्यायाधीश की नियुक्ति हुई है, जबकि उच्च न्यायालयों में यह अनुपात लगभग 11.5 फीसद है। अधीनस्थ न्यायालयों में यही आंकड़ा 30 फीसद है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

दवाओं की गुणवत्ता...

औषधि एवं शल्य चिकित्सा यानी सर्जरी की भारत में सदियों पुरानी समृद्ध परंपरा रही है। समय के साथ नवाचारों से यह परंपरा और निखरती गई। इसका ही परिणाम है कि आज भारत को दुनिया के दवाखाने की प्रतिष्ठा प्राप्त है। आयुर्वेद के प्राचीन ज्ञान से लेकर सुश्रुत के उत्कृष्ट कार्य तक चिकित्सा क्षेत्र में भारत ने एक स्थायी एवं गहरा प्रभाव छोड़ा है। इस सशक्त बुनियाद ने देश को आधुनिक चिकित्सा में भी प्रगति की ओर उन्मुख किया है। इसके आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में शोध एवं विकास को गति मिली, जिसका लाभ दवाओं, जैव-प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य उपकरणों के विकास में हुआ। आज भारत विश्व दवा उद्योग का प्रमुख खिलाड़ी है, जो उच्च गुणवत्ता वाली किफायती दवाएं उपलब्ध करा रहा है। ये दवाएं विकसित एवं विकासशील देशों के करोड़ों लोगों तक पहुंच रही हैं। इनसे विश्व भर में स्वास्थ्य की दशा-दिशा सुधारने में बड़ी सफलता मिली है। भारत में कुशल कामकाजी आबादी, मजबूत शैक्षणिक ढांचा और सरकारी प्रोत्साहक नीतियों से चिकित्सा और दवाओं के क्षेत्र में अत्याधुनिक शोध एवं नवाचार के लिए अनुकूल परिवेश भी तैयार हुआ है। देश में दवा उद्योग के निरंतर विस्तार और विश्व बाजार में उसकी गहरी होती पैठ की पुष्टि निर्यात के आंकड़ों से होती है। वर्ष 2013-14 से 2021-22 के बीच भारतीय दवा उद्योग का निर्यात 90,415 करोड़ रुपये से 103 प्रतिशत की वृद्धि के साथ बढ़कर 1,83,422 करोड़ रुपये हो गया। महज आठ वर्षों में इस उद्योग का आकार 10 अरब डालर तक पहुंचना दवा क्षेत्र में भारत की प्रगति और विश्व स्तर पर उसकी मजबूती को दिखाता है। यह अप्रत्याशित तेजी भारत के दवा क्षेत्र की ताकत के साथ ही सरकार द्वारा तैयार किए गए अनुकूल परिवेश की कहानी भी कहती है। सक्रिय एवं गतिशील नीतियों ने दवा क्षेत्र के लिए एक ऐसा तंत्र विकसित किया कि वह फल-फूलकर वैश्विक स्तर पर अपना स्थायी प्रभाव छोड़ने में सक्षम हो सके। इस कहानी को और शानदार बनाने के लिए सरकार ने उत्पादन आधारित प्रोत्साहन यानी पीएलआइ जैसी योजना पेश की, जिसमें दवा उद्योग के साथ ही उसमें उपयोग आने वाली कच्ची सामग्री के विनिर्माण को बढ़ावा दिया गया। इसने देश में जेनेरिक दवा उद्योग विनिर्माण को नया आयाम दिया। दरअसल, जब दवाओं का ब्रांड पेटेंट समाप्त हो जाता है तो इससे अन्य निर्माता भी इन दवाओं को उत्पादन कर सकते हैं, जिन्हें जेनेरिक दवा कहते हैं। इन दवाओं में तत्व तो वही होते हैं, लेकिन इनकी लागत करीब 30 से 80 प्रतिशत तक कम होती है। किफायती होने की वजह से ये एक बड़ी आबादी की पहुंच में सहजता से आ जाती हैं। भारत इस समय विश्व में जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। निःसंदेह, जेनेरिक दवाओं की गुणवत्ता को लेकर कुछ चिंता व्यक्त की जाती है। बड़ी संख्या में विनिर्माताओं की मौजूदगी और बाजार के प्रतिस्पर्धी स्वरूप को देखते हुए कुछ कंपनियां आवश्यक मानकों की अनदेखी करती हैं, जिससे घटिया दवाएं बाजार में पहुंचकर मरीजों की सेहत के लिए खतरा उत्पन्न करती हैं। हाल के दिनों में देश में निर्मित मिलावटी कफ सिरप का मामला सुर्खियों में रहा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसे में दवा नियामक ड्रग्स कंट्रोलर जनरल आफ इंडिया यानी डीसीजीआइ की सख्ती स्वागतयोग्य है। पिछले महीने ही डीसीजीआइ ने व्यापक निगरानी के बाद घटिया एवं मिलावटी दवाएं बनाने वाली 18 से अधिक दवा कंपनियों के लाइसेंस रद करने से लेकर उनके निलंबन तक की कार्रवाई की।

जापान में लोकप्रिय हो रहा : मिनिमलिज्म (न्यूनतमवाद)

थोड़ा है, ज्यादा की जरूरत नहीं के सिद्धांत पर चल रहा है जापान!

शाबाश इंडिया

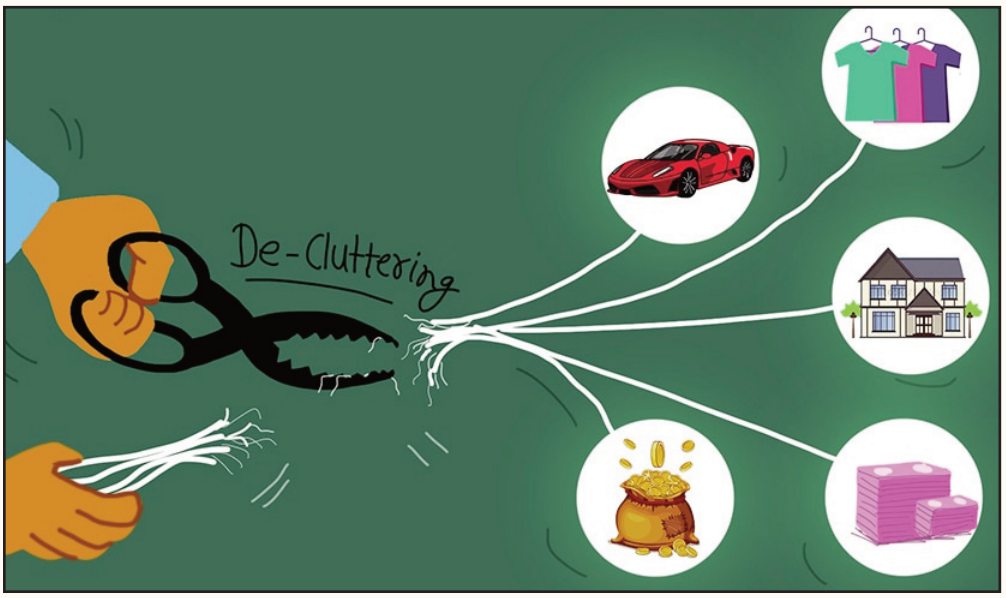

बड़े घर, बड़ी गाडियां, बड़ी जमीनों को तिलांजलि दे रहे हैं। सीमित कपड़े, न्यूनतम समान की नई राह पकड़ी है यहां के लोगों ने, और दावा किया जा रहा है कि वे पहले से अधिक खुश हैं। दिखावटी साजो सामान वे नापसंद करने लगे हैं। यहां जो दिखावे को तवज्जो देता है, उसे असभ्य माना जाता है! और, यह जीवनशैली मजबूरी नहीं, उनके जीने का आसन सलीका है। इस पृथ्वी पर अहसान है यह उनका। तकनीक और आधुनिकतम मशीनी युग में परचम फहरा कर यदि किसी देश के लोग ऐसा करने लगे हैं, तो वाकई यह वास्तविक 'प्रतिक्रमण' है। (जैन धर्म की एक साधना, जिसमें साधक प्रमादजन्य दोषों से निवृत होकर आत्मस्वरूप में लौटने की ओर प्रवृत्त होता है)। धीरे ही सही, लेकिन पनपते रहेंगे और जिएंगे। या सर्वनाश देखते देखते मरेंगे। इन दो विकल्पों में से यदि एक को चुनना पड़े तो मानव जाति पहला ही चुनेगी। लेकिन, इसके पहले वह दृष्टि पैदा होनी होगी जो जापान के लोगों में हुई है। अभी, हमने इस और सोचना भी शुरू नहीं किया है। किसी भी देश के विकास के मापदंड जब तक इकनॉमिक ग्रोथ और जीडीपी के आंकड़े रहेंगे, तब तक इस धरती को बचाने की योजनाएं और कवायदें सिर्फ और सिर्फ भ्रम फैलाने वाले झूठ ही रहेंगे। कौन ऐसी कंपनी होगी, जो अपने टारगेट्स का रिवर्स गियर लगाएगी? जो कंपनी आज एक लाख स्कूटर या तीस हजार कारें बना रही है, उसके अगले वर्ष के टारगेट 10% या उससे भी अधिक होंगे। उत्पादन चाहे कोई भी हो, सेल्स टारगेट बढ़ते ही जायेंगे और उपभोग भी। उपभोग अधिक से अधिक होगा तभी इन कंपनियों की ग्रोथ और देश की जीडीपी बढ़ती रहेगी। अधिक AC, अधिक फ्रिज, अधिक टीवी, अधिक माइक्रोवेव, अधिक इंडस्ट्रियां, अधिक मकान, अधिक वेतन, अधिक व्यवसाय, सब कुछ अधिक....!! फिर क्यों न होगा अधिक कार्बन उत्सर्जन और अधिक नुकसान पर्यावरण का। फिर कैसे बच पाएगी यह धरती? क्या व्यक्तिगत रूप से हम अपने उपभोग को कम करने को तैयार, ईमानदार और गंभीर हैं, जैसे जापान ने किया है? छोटी-छोटी चीजों को लेकर ही हम जागरूक नहीं हैं। हमारे घरों, कार्यालयों में बेमतलब लाइट, पंखे, एसी चलते रहते हैं। रसोई में लगे वाटर प्यूरीफायर से लेकर टॉयलेट्स में जिस तरह से पानी बहाया जाता है हर घर में, उसे नहीं रोकेंगे, लेकिन धरती और पर्यावरण संरक्षण की बड़ी बड़ी बातें अवश्य करेंगे!! हम आत्मावलोकन करें। किस कदर हमारा उपभोग बढ़ा है? ईमानदार कोशिश, अपने घर और अपनी आदतों में करनी होगी। जब तक उपभोग कम नहीं करेंगे तब तक उत्पादन कम नहीं होगा। और जब तक उत्पादन कम नहीं होगा, अपशिष्टों के खंजरों से धरती लहूलुहान होती रहेगी। दूसरे बेतहाशा उपभोग कर रहें हैं, केवल मेरे अकेले के कटौती करने से क्या होगा की सोच से ऊपर उठना होगा। जब तक इसे जीने का तरीका और सलीका नहीं बनायेंगे तब तक आगे की पीढ़ी न्यूनतमवाद की आवश्यकता को नहीं समझ पाएगी। शुरूआत स्वयं से और अपने घर से करेंगे, तब शायद एक पीढ़ी बाद इसके कुछ सुखद परिणाम सामने आ सकेंगे। धरती बची रहेगी तो ही रहेगा हमारा अस्तित्व। इस देश की परंपरा ने जीवन जीने का विकसित दृष्टिकोण दिया। संतोष को परम सुख का कारक बताया। जो है, उसमें संतुष्ट रहने के तरीके सुझाए। धरती को माता कहा, पानी और पेड़ों की पूजा की। लेकिन, जीवन के इन आधारभूत तत्वों को कमाई और आधुनिकता के नाम पर अब नेस्तनाबूत किया जा रहा है। पश्चिम की नकल करते करते हम बेहद लालची और भोगी बन गए। उन्होंने, हमारी पुरातन राह में सार माना और उसे जीवनशैली बनाने के लिए कमर कसी। और हम!? हमारी आंखे अभी बंद हैं। और-और की जो चाह है, यह इस धरती से जीवन का ही सर्वनाश कर दे, इसके पहले आंख खुल जाए तो बेहतर।

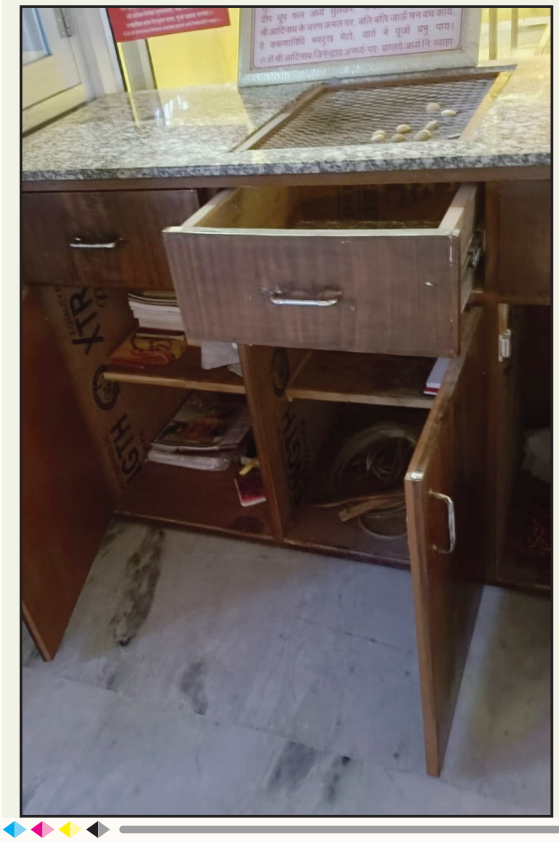

जैन मंदिरों में लगातार चोरी की घटनाएं, जैन समाज में रोष

मुहाना मंडी जैन मंदिर में दो माह में हुई दुबारा चोरी

जयपुर. शाबाश इंडिया। पारस विहार स्थित चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मुहाना मंडी, मोहनपुरा, जयपुर में दो महिने के अन्तराल में ही दुबारा फिर हुई चोरी हुई। अध्यक्ष पवन गोदिका ने बताया कि आज प्रातः माली मंदिर खोलने आया तब उसे पता चला कि मंदिर में चोरी हो गई, तब उसने कमेटी को फोन करके बुलाया। उपाध्यक्ष धमेन्द्र गोदीका ने बताया कि चैनल गेट के ताले तोड़ने के बाद जब मेन गेट नहीं खोल पाये तो चोर रसोई की छत से मंदिर जी की छत पर चढ़कर छत का गेट खोलकर नीचे आकर एक चौबीसी, एक अजित नाथ, एक धर्मनाथ भगवान की 13 इंच की प्रतिमा तथा दो आदिनाथ एक पदम प्रभू की 5 इंच की मूर्तिया को चुराकर तथा दान पात्र को तोड़ कर लगभग 10/12 हजार नगद रुपए ले गये। मुहाना मंडी पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई। प्रतीक गोदीका ने बताया कि थाना अधिकारियों ने मोके पर आकर मुआयना कर आश्वासन दिया कि जल्द ही चोर पकड़ लिए जायेगे। राजस्थान जैन सभा के महामंत्री मनीष बेद ने बताया कि लगातार जैन मंदिरों में चोरियां होने से जैन समाज में रोष व्याप्त है।

पंचकल्याणक महोत्सव के चौथे दिन केवलज्ञान कल्याणक मनाया

दीक्षा उपरांत आदिनाथ की आहारचर्या से हुआ पड़गाहन का मनोरम दृश्य

विवेक पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर। शहर के नवलगढ़ रोड स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर द्वारा चंद्रलोक गार्डन में चल रहे पांच दिवसीय श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ जिनबिम्ब पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के चौथे दिन मंगलवार को तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा सहित सभी प्रतिमाओं को मंत्रित किया गया। भगवान आदिनाथ जी का समवशरण बनाया गया ।प्रचार मंत्री विवेक पाटोदी ने बताया कि ज्ञान कल्याणक दिवस पर प्रतिमाओं को मंत्राराधना के साथ प्रतिमाओं के नेत्रोन्मिलन व प्राण प्रतिष्ठा के लिए आचार्य श्री विवेक सागर महाराज द्वारा सूर्य मंत्र दिए गए । कार्यक्रम के दौरान जयकारों के मध्य केवल्य ज्ञान ज्योति प्रज्ज्वलित की गई। परिसर में श्रद्धालुओं द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की पावन क्रियाओं के दौरान दिव्यता के लिए णमोकार महामंत्र का श्रद्धापूर्वक जाप किया गया। ज्ञान कल्याणक पूजन किया गया ।समवशरण की रचना आकर्षण का केंद्र बनी रही। कार्याध्यक्ष पंकज दुधवा व उपाध्यक्ष आशीष जयपुरिया ने बताया कि कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रातःकाल नित्याभिषेक व शांतिधारा हुई ।शांतिधारा का सौभाग्य नवरंगलाल शकुंतला देवी बड़जात्या परिवार फतेहपुर को प्राप्त हुआ । इसके पश्चात दीक्षा कल्याणक पूजन हुआ जिसके बाद आचार्य श्री विवेक सागर महाराज के मंगल प्रवचन हुए ।जिससे पूर्व पाद प्रक्षालन का सौभाग्य शशि कुमार अमित कुमार अभिषेक दीवान व विमल कुमार मोहित कुमार झांझरी रेटा वाले परिवार को प्राप्त हुआ । शास्त्र भेट संतोष कुमार प्रवीण कुमार ठोल्या खटुंदरा वाले परिवार द्वारा किया गया । इसके पश्चात भगवान आदिनाथ रूप मुनि ऋषभ कुमार के दीक्षा के आहार चर्या की क्रियाये सम्पन्न हुए । आहार चर्या के दौरान जाते वक्त सैकड़ो श्रावक श्राविकाएं शोभायात्रा में चल रहे थे ।पहले तीर्थंकर आदिनाथ के काल में लोग न तो आहार बनाने की विधि जानते थे ओर न ही आहार कराने की विधि का उनको ज्ञान था। इसलिए दीक्षा लेने के बाद जब आहार के लिए आदिनाथ निकलते तो उन्हें विधि न मिलने से उनका आहार न हो पाता। इस तरह एक दो दिन नहीं पूरे 13 माह निकल गए। वैशाख मास की तृतीया के दिन जब आदिनाथ भगवान आहार को निकले तो हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस ने उनका विधिपूर्वक पडगाहन किया , राजा श्रेयांस को रात के अंतिम पहर में उन्हें देवयोग से स्वपन्न आया और सुबह पडगाहन कर आदिनाथ(मुनि ऋषभ कुमार) को उन्होंने इक्षु रस अर्थात गन्ने के रस का आहार दिया।

महावीर इंटरनेशनल रॉयल द्वारा दिव्यांग, विमंदित बच्चों की भोजन सेवा

ब्यावर. शाबाश इंडिया

सबको प्यार सबकी सेवा के उद्देश्य से नवगठित महावीर इंटरनेशनल रॉयल के तत्वावधान में वीर नरेन्द्र गेलडा परिवार द्वारा मान कंवर जी गेलडा पुण्य स्मृति में दिव्यांग, विमंदित स्पेशल बच्चो को समाज की मुख्य धारा में लाने हेतु प्रयत्नशील संजय स्पेशल स्कूल में भोजन करवा कर मानव सेवार्थ कार्य किया गया। संस्था चेयरमैन वीर अशोक पालडेचा व वीर रूपेश कोठारी - सचिव ने बताया कि महावीर इंटरनेशनल रॉयल ब्यावर अपने गठन से ही सेवा कार्य में सक्रिय रूप से कार्य कर सेवा क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने हेतु प्रयत्नशील है। संस्था सह सचिव वीर योगेंद्र मेहता के अनुसार इस अवसर पर वीर दिलीप दक, वीर पंकज सखलेचा,वीर अभिषेक नाहटा,वीर अमित बाबेल,वीर जितेन्द्र धारीवाल, वीर पुष्पेंद्र चौधरी,वीर रूपेश कोठारी, वीर बाबूलाल आच्छा, वीर पदम बिनयकिया,वीर गौतम रांका,वीर अक्षय बिनायकिया,वीर रवि बोहरा,वीर प्रदीप मकाना,वीर मनोज रांका,वीर हेमेन्द्र छाजेड़,आदि सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम संयोजक वीर अमित बाबेल, वीर पुष्पेन्द्र चौधरी ने जानकारी दी कि इस अवसर पर लाभार्थी नरेन्द्र गेलडा परिवार का संस्था की ओर से अभिनंदन किया गया।

जैन मिलन ने वृद्धाश्रम में मनाया स्थापना दिवस

बुजुर्गों एवं बच्चों से ली स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

मुरैना। भारतीय जैन मिलन का 58वां स्थापना दिवस विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। जैन मिलन महिला **'वर्धमान'** शाखा मुरैना की क्षेत्रीय संयोजिका श्रीमती सरिता जैन ने जानकारी देते हुये बताया कि जैन मिलन की सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि संस्था का 58वां स्थापना दिवस वृद्धाश्रम एवं नेत्रहीन बच्चों के साथ मनाएंगे । तय कार्यक्रम कर अनुसार सभी सदस्याएं शहर के वृद्धआश्रम एवं नेत्रहीन बच्चों के बीच पहुचीं और सभी को प्रातः का नास्ता वितरित किया । नास्ते में पोहा, बिस्किट, जूस, चिप्स आदि वितरित किये। जैन मिलन की सदस्याओं का अपनत्व व वात्सल्य देखकर सभी बुजुर्ग एवं बच्चे बहुत ही खुश नजर आये । उन सभी के चेहरे पर खुशी नजर आ रही थी । सभी ने वृद्ध महिला पुरुषों से उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चर्चा की । वर्धमान शाखा की अध्यक्ष श्रीमती रुबी जैन सहित सभी सदस्यों ने अपना काफी समय वृद्धजनों एवं नेत्रहीन बच्चों के बीच

गुजारा । सभी ने बच्चों से बात करके उनके साथ अपने जीवन के अनुभव साझा किए। इस मौके पर श्रीमती सरिता जैन ने कहा कि शारिरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद भी बच्चों का हुनर उनके जीवन को सुखमय बनाएगा हम सभी को मिलकर बच्चों के हुनर को निखारने का कार्य करना चाहिए । उन्होंने कहा कि बच्चे एवं बुजुर्गों के साथ बिताए हुए यह पल हमारे लिए हमेशा यादगार रहेंगे । हम सबको बच्चो से मिलकर बहुत अच्छा लगा । इस अवसर पर संस्था के सभी सदस्यों ने कहाँ कि हम आगे भी ऐसे ही समाज सेवा के कार्यक्रम करते रहेंगे।

समाजसेवी श्री तारा चंद बोहरा देहदानी को सादर नमन

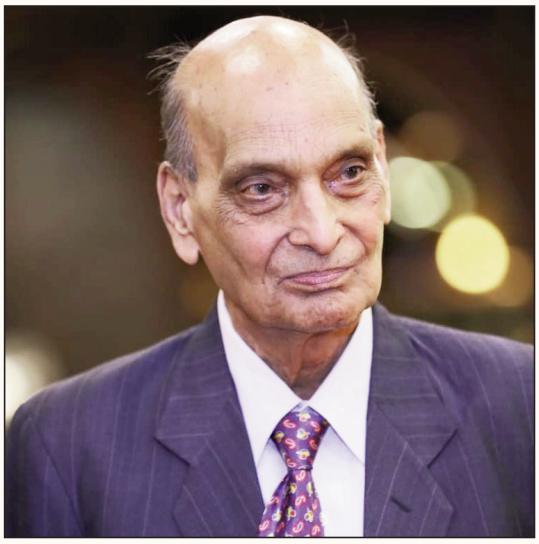

शाबाश इंडिया। बेहद सौम्य और हंसमुख छवि के धनी सदा मानव सेवा को सहज समर्पित उदारमना शख्सियत आदरणीय ताराचंदजी बोहरा उमर 84 साल की देह का अवसान प्रकृति की नियति की बलि भले चढ़ गया हो परंतु वैज्ञानिक सोच के धनी बोहराजी की देह विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए शोधार्थ समर्पित हो अमरत्व को प्राप्त हो गयी है। उनकी यह शोधार्थ समर्पित देह मानव कष्टों के कारकों के हरण की राह दिखायेगी। अमरत्व के धनी, देहदानी श्री तारा चंद बोहरा परिवार के सदस्य उनकी पत्नी श्री मति त्रिशला एवम उनके बड़े दामाद समाजसेवी श्री संजीव तरुणा पाटनी एवम श्री मनीष तृप्ति सोनी के सहमति और उनकी इच्छानुसार करते हुए जेन सोशल ग्रुप सेंट्रल के सानिध्य मैं राजस्थान के सबसे बड़े अस्पताल श्री सवाईमान सिंह कॉलेज मैं देहदान दी, ओर एनाटोमी डिपार्टमेंट मैं पेड़ लगाकर उनके याद मैं परिवार के सदस्यों ने लगाया, राजस्थान सरकार के खाद्य आपूर्ति मंत्री श्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहां की श्री संजीव तरुणा पाटनी का परिवार समाज के लिया उदारहण है जहा उनके माता- पिता एवं सास- ससुर एक साथ उनके साथ रह रहे थे, उनके ससुर पिता श्री श्री ताराचंद जी बोहरा जीवन की अंतिम परिणति को भी इन्होंने बहुत ही सार्थक और जनकल्याण सोच के साथ की और देहदान का संकल्प लिया, परिजनों ने उनकी इच्छा के अनुरूप कल एसएमएस मेडिकल कॉलेज में देहदान किया, पौराणिक कथाओं के अनुसार देवासुर संग्राम में असुरों के राजा वृत्रासुर राजा इंद्र को पराजित कर जा उन्हें स्वर्ग से निष्कासित कर दिया तो भगवान विष्णु के बताए रास्ते के अनुसार देवताओं ने दधीचि से देहदान और अस्थिदान की अभ्यर्थना की। दधीचि ने देवताओं के राजा उस इंद्र को भी अपनी देह दान में दे दी, संजीव तरुणा पाटनी और भाग्यशाली परिवार को बहुत बहुत साधुवाद, तीए की बैठक हरीश चंद तोतुका भवन भट्टरकजी की नसिया नारायण सिंह सर्किल पर रखी गई जिसमें समाज एवम सभी परिवार के सदस्य और एलआईसी एंप्लॉयज एसोसिएशन और भारी जनसमूह ने पहुंच कर उनको श्रद्धांजलि दी और उनकी दोहती श्री सर्वांगी पाटनी ने अपने नाना श्री ताराचंद जी बोहरा के बारे में मार्मिक यादगार स्मरण बताएं।

भारतीय जैन मिलन के स्थापना दिवस पर सकोरा एवं गमछो का वितरण किया

सागर. शाबाश इंडिया

जैन मिलन मकरोनिया क्षेत्र क्रमांक 10 के द्वारा भारतीय जैन मिलन की स्थापना दिवस एवं मजदूर दिवस पर महावीर प्रार्थना के साथ ही मुख्य अतिथि बलवंत सिंह ठाकुर पार्षद एवं सभापति नगर पालिका मकरोनिया द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया तथा इस अवसर पर उन्होंने 108 मजदूरों एवं राहगीरों को गमछो एवं सकोरो का वितरण पक्षियों को छतों पर पानी भरकर रखने हेतु दिए ताकि पक्षी गर्मियों में अपनी प्यास बुझा सके । इस अवसर पर वीर संतोष जैन गढ़ाकोटा क्षेत्रीय संयुक्त मंत्री वीर सुरेश जैन अध्यक्ष वीर राजेश जैन कोषाध्यक्ष वीर रविंद्र जैन मंत्री वीर हेमचंद्र जैन कार्यकारी अध्यक्ष वीर संजय जैन कंट्रोल पूर्व पार्षद कार्यकारी अध्यक्ष वीर निशिकांत सिंघई प्रचार मंत्री वीर मनीष विद्यार्थी शाहगढ़ प्रचार मंत्री वीर प्रकाश चंद्र जैन वीर इंजी, राजीव भारिल्ल वीर प्रदीप जैन वीर अनुपम जैन वीर आनंद जैन वीर डॉक्टर सुभाष जैन वीर प्रसून जैन वीर आर के जैन वीर निलय जैन वीर राजेश मलैया वीर आनंद जैन वीर ऋषभ शाहगढ़ वीर अजीत जैन बैंक वीर पी सी जैन वीर डाक्टर महेंद्र समैया वीर के सी जैन वीर प्रदीप शास्त्री वीर प्रकाश जैन मोदी मार्बल वीर प्रदीप जैन मंगलम वीर संपत जैन सभी मार्गदर्शक एवं विशेष कार्यकारिणी सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में सदस्यगण मौजूद थे कार्यक्रम के अंत में वीर रविंद्र जैन मंत्री द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

ज्ञानसागर जन्मोत्सव पर प्याऊ का हुआ शुभारम्भ

पक्षियों के सकोरे, अन्न प्रसादी, शर्बत का हुआ वितरण

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

मुरेना। जैन सन्त आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के जन्मोत्सव पर ज्ञानतीर्थ सहित शहर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पूज्यवर ज्ञानसागर महाराज के अवतरण दिवस को जैन समाज ने हर्षोल्लास पूर्वक मनाया । इस पावन अवसर पर ज्ञानतीर्थ एवं बड़े जैन मंदिर जी में प्रातः श्री जिनेन्द्र प्रभु के अभिषेक, शांतिधारा के पश्चात पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज की विशेष पूजा अर्चना की गई । जैन समाज की सेवाभावी

संस्था श्री यंग दिगम्बर जैन फाउंडेशन द्वारा शीतल जल सेवा का शुभारम्भ किया गया । गोपीनाथ की पुलिया एवं सदर बाजार में सर्वश्री प्रेमचन्द जैन, राजेन्द्र भण्डारी, योगेंद्र जैन, अनिल जैन व्याख्याता, पंकज जैन आदि ने स्वास्तिक बनाकर नल की टोटी चालूकर प्याऊ का शुभारम्भ किया।

कुराबड़ विधान सम्पन्न

कुराबड़. शाबाश इंडिया

धर्म नगरी कुराबड़ मे श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर जी को 100 वर्ष पूर्ण होने पर शताब्दी महोत्सव व ध्वजा परिवर्तन समारोह एवं रत्नत्रय विधान का आयोजन रखा गया जो सानन्द भक्ति भाव से सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम प. महावीर प्रसाद शास्त्री, 'टोकर ' उदयपुर के निर्देशन में हुआ एवं इनके साथ विधानाचार्य के रूप में प. सचिन शास्त्री चैतन्यधाम व पं - हितंकर शास्त्री उदयपुर रहे। इस मंदिर में सन् 1923 में 23 अप्रेल को पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक भगवान विराजमान किये गये थे। दो दिवसीय कार्यक्रम में 29 अप्रेल को पं. डॉ. महावीर प्रसाद शास्त्री उदयपुर का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात भक्ति संध्या का कार्यक्रम हुआ । 30 अप्रेल को प्रातः रत्नत्रयविधान , ध्वजा परिवर्तन आदिनाथ मंदिर व सीमंधर जिनालय की गई। तत्पश्चात भव्य जुलुस निकाला गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में 700 से अधिक लोग उपस्थित थे अहमदाबाद, मुंबई, उदयपुर, साकरोदा, भिंडर, शिशवी आदि अनेक स्थानों से साधर्मी जन पधारे थे। यह जानकारी जीवनलाल जी कुरावत ने दी। अंत में महावीर जी कुरावत ने सबका आभार व्यक्त किया । पं. हितंकर शास्त्रीको जैन गौरव से सम्मानित किया गया ।

पुण्यतिथि 03 मई

हार्दिक श्रद्धांजलि

स्व. श्री सुजानमल जी जैन (गोधा)

06.10.1928 - 03.05.2020

पूज्य पिताजी की स्मृति में श्रद्धा सुमन

अश्विनी-मधु (पुत्र-पुत्रवधू)
अंशुल-पूर्वा, रोहन-सलोनी (पौत्र-पौत्रवधू)
अद्विक, रूचिर (पड़पौत्र)

नेमी सागर कॉलोनी, जयपुर

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com